48th ISAE Annual Convention & Symposium
College of Technology and Engineering
(GOLDEN JUBILEE YEAR 2014)
Maharana Pratap University of Agriculture and Technology
Udaipur, Rajasthan-313 001

Phone: 91-294-2470837 & 2470119
Fax: 91-294-2471056

No.CTAE/48th ISAE/2014/ 15 Dated:21st February, 2014

Patron
Dr.O.P.Gill
Vice Chancellor
MPUAT, Udaipur
Chairman NAC
Dr.K.N.Nag
Ex- Vice Chancellor
RAU, Bikaner

Convenor
Dr B.P.Nandwana
Dean
CTAE, Udaipur
email: bpnand@yahoo.com

Co-Convenors
Dr.Y.C.Bhatt, Prof.
Dr.A.K.Mehta, Prof.
Dr.S.K.Kothari, Prof.

Organizing Secretary
Dr.Ghanshyam Tiwari
Prof. & Head
FMPE, CTAE, Udaipur
email:
isaeudaipur2014@gmail.com

Co-Organizing Secretary
Dr. Ajay Sharma, Prof.
Dr.G.P.Sharma, Prof.

Finance Secretary
Dr.Deepak Sharma,
Professor REE, CTAE,
Udaipur
email:
isaeudaipur2014@gmail.com

प्रेस विज्ञप्ति

कृषि अभियान्त्रिकी सहभागिता–उन्नत कृषि को देगी नये आयाम

संरक्षित कृषि में अभियान्त्रिकी सहभागिता पर राष्ट्रीय अधिवेशन का शुभारम्भ

उदयपुर 21 फरवरी 2014 महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के संगठक, प्रौद्योगिकी एवं अभियान्त्रिकी महाविद्यालय की स्थापना के स्वर्ण जंयती वर्ष के कार्यक्रमों के अर्न्तगत भारतीय कृषि अभियन्ता परिषद् का 48 वां राष्ट्रीय अधिवेशन एंवम संरक्षित कृषि में अभियान्त्रिकी सहभागिता पर तीन दिवसीय संगोष्ठी का शुभारम्भ महाविद्यालय में हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय प्रो. ओ. पी. गिल ने कहा कि कृषि अभियन्ताओं का देश के ग्रामीण क्षेत्रों में विकास में अभुतपूर्व योगदान है। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में मृदा एवम जल संरक्षण, जल ग्रहण क्षैत्र विकास एवं जल प्रंबधन के क्षेत्र में कृषि अभियन्ताओं के कार्यो से प्रदेश के जनमानस का आर्थिक एवंम सामाजिक विकास हुआ है ।

प्रो. गिल ने कहा कि वर्तमान में दुनिया भर के पचास से अधिक देशों के लगभग अस्सी मिलियन हैक्टर क्षेत्रफल में संरक्षित कृषि की जा रही है और यह आँकड़ा तीव्रता से बढ़ रहा है। उन्होनें हाल ही में राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (एन. आई.टी. टी. आर.) चण्डीगढ़ द्वारा कृषि अभियान्त्रिकी महाविद्यालय उदयपुर को उत्तर भारत के सर्व श्रेष्ठ तकनीकी संस्था घोषित किये जाने की बधाई दी। आदिवासी एवं पिछड़े क्षेत्रों के किसानों को कृषि तकनीकों से लाभान्वित होना अभी बाकी है इसलिये तीव्र प्रयासों द्वारा इन तकनीकों को जरुरतमंदो तक प्रभावी रुप से पंहुचाया जाना चाहिए। उन्होनें कहा कि कटाई उपरांत तकनीक एवं मूल्य संवर्धन क्षेत्र में भी कृषि अभियंताओं की मध्यस्थता अत्यावश्यक है। इस क्षेत्र में सरकारी विभागों, वित्तीय संस्थाओं,गैर सरकारी संस्थाओं आदि के सम्नवित प्रयास की आवश्यकता है जिससे उचित व सुरक्षित पैकेजिंग व मूल्य संवर्धन द्वारा कटाई –उपरांत हानियां घटाई जा सकें।

भारतीय कृषि अभियन्ता परिषद् नई दिल्ली के अध्यक्ष डा. वी. एम. मियान्दे ने अपने अध्यक्षीय उदबोधन में परिषद् का इतिहास बताते हुए वर्ष भर के विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी दी। उन्होनें संरक्षित कृषि में अभियन्ताओं की सहभागिता पर विशेष आग्रह करते हुए कहा कि द्वितीय हरित क्रान्ति की रुपरेखा में बढ़ती हुई जनसंख्या के लिये अनाज उत्पादन में कृषि अभियन्ताओं का विशेष योगदान रहेगा। उन्होनें कहा कि भारतीय कृषि में विषमता को देखते हुए कृषि अभियन्ताओं के सामने बड़ी चुनौतियाँ है। देश के 83 प्रतिशत किसान लघु जोत वाले हैं ऐसी अवस्था में तकनीकी हस्तान्तरण के साथ ही सामाजिक, अभियान्त्रिकी एवं तकनीकी सिफारिशों को सही प्रकार से लागू करने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डा. योशिएके किसिडा मुख्य सम्पादक एशिया अफ्रीका एवं लेटिन अमेरिका मे कृषि आधुनिकीकरण पत्रिका जापान के सम्पादक ने पत्रिका के विगत 40 वर्षो का इतिहास बताते हुए कहा कि विकासशील देशों के 70 प्रतिशत लोग कृषि से जुड़े हुए एवं गरीब हैं। आज कृषि आधुनिकीकरण में तकनीक के विकास से उन्हें आगे लाने की आवश्यकता है। इसी कड़ी में अमेरिकन कृषि अभियन्ता परिषद् के अध्यक्ष एवं कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डा. ललित वर्मा ने वैश्विक स्तर पर विभिन्न महाद्वीपीय कृषि अभियान्त्रिकी संस्थाओं एवं वैज्ञानिकों को एकजुट होकर जल,खाद्य एवं कृषि के सतत विकास एवं उपलब्धता को सुनिश्चित करने के लिए एक टीम के रुप में कार्य करने की सलाह दी। उन्होनें कहा कि तकनीकी विकास के साथ ही कृषि वैज्ञानिकों की सलाह को नीति निर्धारण द्वारा महत्व देने की एवं इन सिफारिशों को लागू करने की विश्व स्तर पर आवश्यकता है।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में कृषि अभियान्त्रिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं संगोष्ठी के संयोजक डा. बी.पी. नन्दवाना ने सभी आगुन्तकों का स्वागत किया एवं महाविद्यालय की स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने पर वर्ष पर्यन्त आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला। उन्होनें महाविद्यालय के विगत 50 वर्षो के विभिन्न उपलब्धियों की जानकारी भी दी।

इस अवसर पर भारतीय कृषि अभियन्ता परिषद द्वारा कृषि अभियान्त्रिकी के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान देने वाले देश के ख्यातनाम वैज्ञानिकों एवं पुरोधा अभियन्ताओं को सम्मानित किया गया। देश के प्रथम भारतीय कृषि अभियन्ता एवं राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. के.एन.नाग को कृषि अभियान्त्रिकी के सर्वोच्य सम्मान

''डा.मेशन वाघ पायोनियर लाईफ टाइम अचीवमेंट अर्वाड'' एवं केन्द्रीय क्षारीय मृदा अनुसंधान संस्थान, करनाल के डा. एस.के. गुप्ता को आई.एस ए.ई. गोल्ड मैडल से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कृषि अभियान्त्रिकी में विभिन्न उपलब्धियों के लिए देश के विभिन्न क्षेत्रो से आये 20 से अधिक अभियन्ताओं व वैज्ञानिकों को भी सम्मानित किया गया।

वार्षिक अधिवेशन के आयोजन सचिव डा. घनश्याम तिवारी ने धन्यवाद ज्ञापित किया एवं कार्यक्रम का संचालन डा. दीपक शर्मा, प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, नवीनीकरण ऊर्जा अभियान्त्रिकी विभाग ने किया।

(Dr A K Kurchania)
Convener, Press and Publicity Committee)
48th ISAE Convention and Symposium